INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

विश्व धर्म सम्मेलन (1893) में विवेकानन्द के प्रथम भाषण की वैश्विक दृष्टि से प्रासंगिकता

डॉ० सुनील कुमार
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग
राजकीय मॉडल महाविद्यालय
मीठीबेरी (हरिद्वार), उत्तराखण्ड

शोध-सार

स्वामी विवेकानन्द का जन्म उस दौर में हुआ जब भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था तथा विश्व तीव्र राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा था। एक ओर औपनिवेशिक शक्तियाँ अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता का प्रचार कर रही थीं, वहीं दूसरी ओर विभिन्न धर्मों एवं सभ्यताओं के मध्य अविश्वास और संघर्ष की स्थिति भी विद्यमान थी। ऐसे समय में स्वामी विवेकानन्द द्वारा 11 सितम्बर 1893 को शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में दिया गया प्रथम भाषण केवल भारत के आध्यात्मिक प्रतिनिधित्व का माध्यम ही नहीं था, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए सहिष्णुता, सार्वभौमिक स्वीकृति, आध्यात्मिक एकता और विश्व बन्धुत्व का ऐसा संदेश था जिसने आधुनिक वैश्विक विमर्श को नई दिशा व गति प्रदान की थी। "अमेरिकी बहनों व भाईयों" से प्रारम्भ होने वाला उनका संबोधन केवल औपचारिक अभिवादन नहीं था, बल्कि सम्पूर्ण मानव समाज को एक परिवार मानने वाली भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि से परिचित कराना था। प्रस्तुत शोधपत्र में विवेकानन्द के प्रथम भाषण के प्रमुख कथनों का विश्लेषण करते हुए उनकी वैश्विक प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है। शोधपत्र में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि धार्मिक सहिष्णुता, अंतरधार्मिक संवाद, सांस्कृतिक बहुलतावाद, मानव गरिमा, विश्व शान्ति तथा वैश्विक सहयोग जैसे समकालीन विषयों पर विवेकानन्द के विचार आज भी समान रूप से उपयोगी एवं प्रासंगिक हैं। साथ ही उनके विचारों को वर्तमान वैश्विक परिस्थिति, संयुक्त राष्ट्र के आदर्शों तथा वैश्वीकरण की चुनौतियों के संदर्भ में आलोचनात्मक दृष्टि से भी समझने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: विश्व धर्म सम्मेलन, शिकागो, धार्मिक सहिष्णुता, विश्व बन्धुत्व, सांस्कृतिक बहुलतावाद, अंतरधार्मिक संवाद, विश्व शान्ति तथा वैश्विक सहयोग।

शोध-पत्र

शोध पद्धति - इस शोध-पत्र को लिखने में प्राथमिक स्रोतों – स्वामी विवेकानन्द के भाषण, लेख, पत्र व द्वितीयक स्रोतों - विभिन्न इतिहासकारों द्वारा लिखित पुस्तकें, जीवनी, शोध-पत्र, पत्रिकाएँ और संदर्भ ग्रंथ की सहायता लेते हुए ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है।

शोध का उद्देश्य - इस शोध-पत्र का उद्देश्य विवेकानन्द के प्रथम भाषण के प्रमुख उद्धरणों का अध्ययन व विश्लेषण करते हुए उनकी वैश्विक प्रासंगिकता का विवेचन करने का प्रयास किया गया है। शोधपत्र में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि धार्मिक सहिष्णुता, अंतरधार्मिक संवाद, सांस्कृतिक बहुलतावाद, मानव गरिमा, विश्व शान्ति तथा वैश्विक सहयोग जैसे समकालीन विषयों पर विवेकानन्द के विचार आज भी समान रूप से उपयोगी एवं प्रासंगिक हैं। इसके साथ ही उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता को उजागर करना भी है।

मानव इतिहास में कुछ ऐसे भाषण हुए हैं जिन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों को प्रभावित करने के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों की वैचारिक दिशा को प्रभावित किया है। अब्राहम लिंकन का "गेटिसबर्ग भाषण", मार्टिन लूथर किंग जूनियर का "आई हेव ए ड्रीम" तथा नेल्सन मंडेला के लोकतांत्रिक मूल्यों पर दिए गए भाषण इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। इसी क्रम में 11 सितम्बर 1893 को अमेरिका के शिकागो नगर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द का प्रथम भाषण भी विश्व इतिहास की एक ऐसी विद्युतीय प्रभाव एवं मंत्रमुग्ध कर देने वाली घटना है जिसने धार्मिक विचारों के वैश्विक विमर्श को नई दिशा प्रदान की। यह भाषण केवल किसी धर्म विशेष का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए सह-अस्तित्व, समानता और पारस्परिक सम्मान का संदेश जनमानस तक पहुँचाने का कार्य करता है।

उन्नीसवीं शताब्दी का वैश्विक परिदृश्य साम्राज्यवाद, औद्योगिक क्रान्ति और सांस्कृतिक वर्चस्व की प्रवृत्तियों से युक्त था। यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियाँ स्वयं को सभ्यता का प्रतिनिधि करने वाली तथा एशिया और अफ्रीका की सांस्कृतिक परम्पराओं को प्रायः हीन दृष्टि से देखती थीं। भारत भी उस समय ब्रिटिश शासन के अधीन था और पश्चिमी समाज में भारतीय धर्म एवं संस्कृति के संबंध में अनेक भ्रांतियाँ प्रचलित थीं। ऐसी परिस्थिति में स्वामी विवेकानन्द का शिकागो पहुँचना और वहाँ भारतीय आध्यात्मिक परम्परा का तार्किक, आत्मविश्वासपूर्ण तथा सार्वभौमिक स्वरूप प्रस्तुत करना केवल धार्मिक उपलब्धि नहीं था, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता के पुनर्जागरण का भी महत्वपूर्ण पक्ष था।

विवेकानन्द का भाषण भारतीय दर्शन की उस परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है जिसकी जड़ें प्राचीन भारतीय ज्ञान के वाहक वेद, उपनिषद और भगवद्गीता में निहित हैं। भारतीय संस्कृति का मूल सिद्धान्त "एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" उनके सम्पूर्ण भाषण में दिखाई देता है। उन्होंने किसी धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि यह प्रतिपादित किया कि विभिन्न धर्म सत्य की ओर जाने वाले भिन्न-भिन्न मार्ग हैं। इस प्रकार उनका भाषण आधुनिक अर्थों में धार्मिक बहुलतावाद का एक शक्तिशाली उपदेश था।

समकालीन वैश्विक व्यवस्था में जब धार्मिक असहिष्णुता, सांप्रदायिकता, आतंकवाद, सांस्कृतिक संघर्ष और पहचान की राजनीति जैसी चुनौतियाँ निरन्तर बढ़ती जा रही हैं, तब विवेकानन्द का यह भाषण पुनः प्रासंगिक हो जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिपादित शान्ति, मानवाधिकार, समानता, सहिष्णुता तथा सतत विकास जैसे आदर्श भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसी मानवीय दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करते हैं जिसका प्रतिपादन विवेकानन्द ने अब से लगभग सवा सौ वर्षों पूर्व किया था। यही कारण है कि उनका प्रथम भाषण केवल ऐतिहासिक दस्तावेज़ ही नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक नैतिक तथा दार्शनिक मार्गदर्शक के रूप में दिखाई देता है।

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द के प्रथम भाषण का केवल ऐतिहासिक वर्णन करना ही नहीं है, बल्कि उसके प्रमुख विचारों का वैश्विक संदर्भ में विश्लेषण करना भी है। खास तौर से यह पता करने का प्रयास करना कि 1893 में विश्व धर्म सम्मेलन में व्यक्त किए गए विवेकानन्द के विचार इक्कीसवीं शताब्दी के विश्व पटल में किस प्रकार प्रासंगिक हैं तथा वे आधुनिक मानवता को कौन-सी वैचारिक दिशा प्रदान कर सकते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में विभिन्न धर्मों के मध्य संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से 1893 में अमेरिका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन विश्व के इतिहास में पहली बार विभिन्न धार्मिक परम्पराओं के प्रतिनिधियों को एक ही मंच पर संवाद के लिए आमंत्रित करने का प्रयास था। यद्यपि सम्मेलन का घोषित उद्देश्य धार्मिक समझ और सहयोग को बढ़ावा देना था, तथापि अनेक पश्चिमी विद्वानों और मिशनरियों की अपेक्षा यह थी कि ईसाई धर्म की श्रेष्ठता इस सम्मेलन में स्थापित होगी। भारत उस समय अंग्रेजी शासन के अधीन था और उसकी सांस्कृतिक पहचान औपनिवेशिक विमर्श के कारण अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रही थी। भारतीय समाज के बारे में पश्चिमी जगत में प्रचलित धारणाएँ मुख्यतः मिशनरी साहित्य और औपनिवेशिक लेखन पर आधारित थीं। ऐसे समय में स्वामी विवेकानन्द ने न केवल भारतीय आध्यात्मिक परम्परा का प्रतिनिधित्व किया, बल्कि यह भी सिद्ध किया कि भारतीय दर्शन मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित है। उन्होंने अपने भाषण में किसी धर्म का विरोध नहीं किया, बल्कि सभी धर्मों के बीच समन्वय और पारस्परिक सम्मान का संदेश दिया। इस दृष्टि से उनका भाषण औपनिवेशिक मानसिकता के विरुद्ध भारतीय बौद्धिक ज्ञान को सम्पूर्ण विश्व के सामने लाना भी था।

विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द की उपस्थिति भारतीय पुनर्जागरण के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती तथा रामकृष्ण परमहंस द्वारा प्रारम्भ की गई आध्यात्मिक एवं सामाजिक चेतना को विवेकानन्द ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लाने का काम किया था। उनके भाषण ने यह स्थापित किया कि भारतीय संस्कृति केवल प्राचीन गौरव का विषय नहीं है, बल्कि वह आधुनिक विश्व की समस्याओं के समाधान की क्षमता भी रखती है। स्वामी विवेकानन्द ने अपने प्रथम भाषण की शुरुआत "अमेरिकी बहनों व भाईयों" इन ऐतिहासिक शब्दों से की। इन शब्दों ने सम्मेलन के वातावरण को बदल दिया। इस संबोधन के साथ ही सभागार में लगभग दो मिनट तक तालियों की गड़गड़ाहट होती रही। सामान्यतः उस समय वक्ता स्वयं को उच्च मानकर तथा श्रोताओं को निम्न मानकर अभिवादन करते थे, किन्तु विवेकानन्द ने औपचारिक संबोधन के स्थान पर आत्मीय पारिवारिक शब्दों का प्रयोग किया जिनमें भारतीय दर्शन की उस मान्यता की अभिव्यक्ति थी जिसमें सम्पूर्ण विश्व व मानवता को एक परिवार माना है। इस संबोधन का दार्शनिक आधार उपनिषदों तथा भारतीय संस्कृति में दिखाई देता है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का सिद्धान्त यह प्रतिपादित करता है कि पृथ्वी पर रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति एक ही वैश्विक परिवार का सदस्य है।स्वामी विवेकानन्द ने इसी विचार को व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत किया। उनके लिए सम्मेलन में उपस्थित लोग किसी दूसरे राष्ट्र, नस्ल या धर्म के प्रतिनिधि नहीं थे, बल्कि मानव परिवार के सदस्य थे तथा सभी समान थे। यही कारण है कि उनका यह संबोधन श्रोताओं के हृदय तक पहुँच गया।

वैश्विक दृष्टि से यह संबोधन आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इक्कीसवीं शताब्दी में विश्व जातीय संघर्ष, धार्मिक कट्टरता, शरणार्थी संकट, नस्लीय भेदभाव और सांस्कृतिक विभाजन जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में यदि अंतरराष्ट्रीय संबंध केवल राजनीतिक या आर्थिक हितों के आधार पर संचालित होंगे, तो स्थायी शांति स्थापित करना कठिन होगा। विवेकानन्द का "अमेरिकी बहनों व भाईयों" इस बात का संदेश देता है कि वैश्विक शांति का वास्तविक आधार राजनीतिक समझौते नहीं, बल्कि मानवीय आत्मीयता और पारस्परिक सम्मान हैं जिसमे सभी बराबर हैं। यही कारण है कि यह संबोधन आज भी वैश्विक नागरिकता की अवधारणा को उजागर है।

विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द द्वारा दिया गया प्रथम भाषण आकार में छोटा था, किन्तु उसका असर अत्यंत व्यापक और दूरदर्शी था। यह भाषण किसी धर्म विशेष की विजय का उद्घोष नहीं था, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए सहिष्णुता, समानता और आध्यात्मिक एकता का वाहक था। शायद यही कारण है कि एक शताब्दी से अधिक समय बीत जाने के बाद भी यह भाषण विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों, धार्मिक विमर्शों तथा अंतरराष्ट्रीय संवादों में अध्ययन का विषय बना हुआ है। स्वामी विवेकानन्द ने अपने भाषण में कहा था कि मुझे उस धर्म का अनुयायी होने पर गर्व है जिसने विश्व को केवल सहिष्णुता ही नहीं, बल्कि सभी धर्मों की सार्वभौमिक स्वीकृति का भी संदेश दिया है। उनका यह कथन भारतीय धार्मिक दर्शन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता को अभिव्यक्त करता है। सामान्यतः सहिष्णुता का अर्थ यह माना जाता है कि व्यक्ति दूसरे के विचारों का असहमति के बावजूद भी सम्मान करे। किन्तु विवेकानन्द इससे आगे बढ़कर सार्वभौमिक स्वीकृति की बात का सन्देश देते हैं। उनके अनुसार विभिन्न धर्म केवल सहन किए जाने योग्य नहीं हैं, बल्कि वे सत्य तक पहुँचने के विविध मार्ग हैं और इसलिए सम्मान के लायक हैं। यह दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान के उस सिद्धान्त से प्रेरित है जिसमें सत्य को एक माना गया है, जबकि उसकी अभिव्यक्ति अनेक रूपों में स्वीकार की गई है। ऋग्वेद का प्रसिद्ध मंत्र "एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" इसी दार्शनिक आधार को बताता है। इस प्रकार विवेकानन्द का यह कथन धार्मिक बहुलतावाद का अत्यंत परिपक्व स्वरूप हमारे सामने लाता है।

वैश्विक दृष्टि से इस विचार का महत्व आज और भी बढ़ गया है। आधुनिक विश्व में अनेक संघर्ष धार्मिक पहचान, सांस्कृतिक असहिष्णुता तथा वैचारिक ध्रुवीकरण के कारण उत्पन्न होते हैं। यदि विभिन्न धार्मिक समुदाय केवल सहनशीलता तक सीमित रहें तो संघर्ष की संभावना बनी रहती है, किन्तु यदि वे परस्पर सम्मान और स्वीकृति के आधार पर संवाद स्थापित करें तो सहयोग एवं शांति की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। संयुक्त राष्ट्र तथा यूनेस्को द्वारा अंतरसांस्कृतिक संवाद और अंतरधार्मिक सहयोग पर दिया जाने वाला बल वस्तुतः उसी दिशा की ओर संकेत करता है जिसका प्रतिपादन विवेकानन्द ने 1893 में किया था। इस प्रकार यह भाषण मात्र धार्मिक आदर्श नहीं, अपितु वैश्विक शांति की व्यावहारिक आधारशिला भी प्रस्तुत करता है। इसी क्रम में स्वामी विवेकानन्द आगे कहते हैं कि हम केवल सार्वभौमिक सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, बल्कि समस्त धर्मों को सत्य मानकर स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार विभिन्न धार्मिक परम्पराएँ अपने-अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में विकसित हुई हैं, किन्तु उनका अंतिम लक्ष्य मनुष्य के नैतिक और आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करना है। इसलिए धार्मिक विविधता संघर्ष का कारण नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है।

विशेष तौर से समकालीन संसार में यह सन्देश मायने रखता है क्योंकि वर्तमान में वैश्वीकरण के कारण विभिन्न संस्कृतियाँ और धर्म निरंतर संपर्क आ गये हैं। यदि इस संपर्क का आधार प्रतियोगिता और वर्चस्व होगा, तो सामाजिक तनाव के अवसर भी बढ़ेंगे; किन्तु यदि इसका आधार सम्मान और संवाद होगा, तो वैश्विक सहयोग की नई संभावनाएँ विकसित होंगी। अतः स्वामी विवेकानन्द का यह सन्देश आधुनिक बहु-सांस्कृतिक समाजों के लिए नैतिक दिशा प्रदान करता है। यूरोप, अमेरिका तथा एशिया के अनेक देशों में बढ़ती सांस्कृतिक विविधता के बीच सामाजिक समरसता स्थापित करने के लिए इसी प्रकार की समावेशी दृष्टि की अति आवश्यकता है।

विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द के द्वारा दिए गये भाषण में धार्मिक कट्टरता की कठोर आलोचना की गयी जब उन्होंने कहा कि सांप्रदायिकता, संकीर्णता तथा उनकी भयानक संतान धार्मिक कट्टरता ने इस सुंदर पृथ्वी को लंबे समय तक अपने अधिकार में रखा है। यदि ये विनाशकारी शक्तियाँ न होतीं, तो मानव समाज आज की अपेक्षा कहीं अधिक उन्नत होता। यह सन्देश विवेकानन्द के भाषण की प्रभावशाली और दूरदर्शी सोच को उजागर करता है, यह कथन उनके भाषण का नैतिक और दार्शनिक पक्ष को भी सामने रखता है। उन्होंने धार्मिक कट्टरता एवं असहिष्णुता को केवल धार्मिक समस्या नहीं माना, अपितु मानव सभ्यता की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा के रूप में प्रस्तुत भी किया। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि धर्म के नाम पर हुए युद्धों, नरसंहारों और उत्पीड़नों ने करोड़ों लोगों के जीवन को बर्बाद किया है। स्वामी विवेकानन्द ने धर्म का उद्देश्य मनुष्य को विभाजित करना नहीं, बल्कि उसे नैतिक और आध्यात्मिक रूप से स्वयं को उन्नत एवं विकसित बनाना है।

इक्कीसवीं शताब्दी में आतंकवाद, धार्मिक उन्माद, नस्लीय घृणा और पहचान की राजनीति ने बहुत से देशों में सामाजिक शांति को प्रभावित किया है। ऐसे समय में विवेकानन्द का यह विचार कि धार्मिक कट्टरता मानवता की सबसे बड़ी शत्रु है, विश्व समुदाय को इस चेतावनी को सुधार के रूप में देखा जाना चाहिए। उनका यह सन्देश केवल धार्मिक नेताओं के लिए ही नहीं, बल्कि नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के लिए भी समान रूप से मार्गदर्शन का कार्य करता है। यह कथन आज भी हमें याद दिलाता है कि विज्ञान, तकनीक और आर्थिक विकास तभी सार्थक हैं जब उनके साथ मानवीय सहिष्णुता, करुणा और पारस्परिक सम्मान की भावना को भी विकसित किया जाये।

स्वामी विवेकानन्द का शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन के अवसर पर दिया गया प्रथम भाषण केवल उन्नीसवीं शताब्दी की एक ऐतिहासिक घटना नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी वैश्विक वैचारिक घोषणा है जिसकी प्रासंगिकता समय के साथ और अधिक बढती जा रही है। इक्कीसवीं शताब्दी में विश्व जहाँ अभूतपूर्व वैज्ञानिक प्रगति, डिजिटल क्रांति और वैश्वीकरण का अनुभव कर रहा है, वहीं दूसरी ओर धार्मिक मतभेद, सांस्कृतिक संघर्ष, नस्लीय भेदभाव, आतंकवाद और पहचान की राजनीति जैसी गंभीर चुनौतियों का भी सामना कर रहा है। इन परिस्थितियों में विवेकानन्द का भाषण मात्र आध्यात्मिक आदर्श नहीं, बल्कि वैश्विक समाज के लिए व्यावहारिक तथा सरल मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। उनके भाषण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह किसी एक राष्ट्र, धर्म या सभ्यता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सम्पूर्ण मानवता को एक मिलेजुले नैतिक परिवार के रूप में देखने की दृष्टि भी विकसित करने का प्रयास करता है।

स्वामी विवेकानन्द की वैश्विक दृष्टि का पहला महत्वपूर्ण आधार विश्व बन्धुत्वता की भावना है। उन्होंने अपने भाषण के संबोधन में वहां बैठे समस्त दर्शकों को “अमेरिकी बहनों व भाईयों” शब्दों से संबोधित कर भारतीय संस्कृति की उस मानवीय चेतना को प्रस्तुत किया है जिसमें समस्त मानव जाति को एक परिवार माना गया है। यह विचार केवल भावनात्मक अपील नहीं था, बल्कि वेदान्त दर्शन की उस अवधारणा पर आधारित था जिसके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में एक ही परम चेतना विद्यमान है। यदि सभी मनुष्यों में एक ही आत्मा का निवास है, तो जाति, धर्म, रंग, भाषा और राष्ट्रीयता के आधार पर भेदभाव का कोई नैतिक औचित्य नहीं रह जाता। वर्तमान समय में जब नस्लीय हिंसा, प्रवासी विरोध, धार्मिक ध्रुवीकरण तथा सामाजिक विभाजन जैसी समस्याएँ विश्व के अनेक देशों में दिखाई देती हैं, तब विवेकानन्द का यह दृष्टिकोण मानव गरिमा और समानता की पुनर्स्थापना का प्रभावी आधार बन सकता है।

विवेकानन्द के भाषण का दूसरा महत्वपूर्ण वैश्विक पहलू यह है कि उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी धर्म का उद्देश्य दूसरे धर्म को समाप्त करना नहीं, बल्कि मनुष्य के आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करना है। उनके अनुसार विभिन्न धर्म एक ही सत्य तक पहुँचने के भिन्न-भिन्न मार्ग हैं। यही विचार आधुनिक विश्व में धार्मिक सह-अस्तित्व का का रास्ता दिखाता है। आज संयुक्त राष्ट्र संघ, यूनेस्को तथा अनेक अंतरराष्ट्रीय संगठन अंतरधार्मिक संवाद को शांति स्थापना का आवश्यक साधन मानते हैं। वास्तव में विवेकानन्द ने जिस समन्वयवादी दृष्टिकोण का परिचय 1893 के विश्व धर्म सम्मेलन में दिया, वही आज वैश्विक नीति-निर्माण के महत्वपूर्ण सिद्धान्त के रूप में दिखाई देता है। यह सन्देश उनके विचारों की दूरदर्शिता को दर्शाता है।

उनके भाषण की तीसरी एवं अहम विशेषता विश्व को सांस्कृतिक बहुलतावाद का समर्थन करवाना है। विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति का परिचय किसी संकीर्ण राष्ट्रवादी दृष्टि से नहीं कराया, बल्कि उसे ऐसी सभ्यता के रूप में प्रस्तुत किया जो अनेकताओं और विविधताओं का सम्मान करती है। उन्होंने कहा कि किसी भी संस्कृति की श्रेष्ठता दूसरों को अस्वीकार करने में नहीं, बल्कि उन्हें समझने और सम्मान देने में होती है।

वर्तमान वैश्विक राजनीति के संदर्भ में भी विवेकानन्द के विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। किसी राष्ट्र की शक्ति केवल उसकी सैनिक अथवा आर्थिक क्षमता से नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक और नैतिक विश्वसनीयता से भी निर्धारित होती है। स्वामी विवेकानन्द ने बिना किसी राजनीतिक पद या राज्य शक्ति के भारतीय संस्कृति को विश्व मंच पर जिस सम्मान के साथ प्रस्तुत किया, वह सांस्कृतिक कूटनीति का अद्वितीय उदाहरण में से एक है। उनके भाषण ने पश्चिमी समाज में भारत की छवि को केवल रहस्यवादी देश के रूप में नहीं, बल्कि एक गहन दार्शनिक और मानवीय सभ्यता के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। आज भी भारत की सांस्कृतिक कूटनीति में योग, आयुर्वेद, बौद्ध दर्शन और भारतीय आध्यात्मिक परम्पराओं के साथ विवेकानन्द के विचारों का महत्वपूर्ण स्थान है।

विवेकानन्द का चिंतन मानवाधिकारों के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण व प्रभावशाली दिखता है। यद्यपि उन्होंने आधुनिक अर्थों में मानवाधिकार की भाषा का प्रयोग नहीं किया, तथापि प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर की उपस्थिति स्वीकार करने का उनका सिद्धान्त मानव गरिमा और समान अधिकारों की दार्शनिक आधारशिला प्रस्तुत करता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति में दिव्यता निहित है, तो उसके साथ भेदभाव, हिंसा या शोषण करना नैतिक रूप से अनुचित है। इस दृष्टि से उनके

विचार संयुक्त राष्ट्र के मानवीय अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (1948) की मूल भावना के साथ सामंजस्य रखते दिखाई देते हैं। उनका दृष्टिकोण हमें यह समझाता है कि मानवाधिकार केवल कानूनी अधिकार नहीं हैं, बल्कि वे मानव की आध्यात्मिक गरिमा से भी जुड़े हुए हैं। स्वामी विवेकानन्द बार-बार इस बात पर जोर देते हैं कि किसी भी समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है जब उसके सबसे कमजोर और वंचित वर्गों का उत्थान सुनिश्चित किया जाए। उनका मानना था कि दरिद्र नारायण की सेवा करना ही ईश्वर की सेवा करना है।

यद्यपि विवेकानन्द के विचार अत्यंत व्यापक और प्रेरणादायक हैं, तथापि उनका आलोचनात्मक अध्ययन भी आवश्यक है। यह भी स्वीकार करना होगा कि केवल आध्यात्मिक आदर्शों के आधार पर वर्तमान विश्व की समस्त राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक समस्याओं का समाधान करना व्यावहारिक दृष्टि से संभव नहीं है। चूँकि अंतरराष्ट्रीय संघर्षों के पीछे संसाधनों की प्रतिस्पर्धा, आर्थिक असमानता, भू-राजनीतिक स्वार्थ तथा शक्ति संतुलन जैसे कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए विवेकानन्द के विचारों को व्यावहारिक नीतियों, लोकतांत्रिक संस्थाओं और न्यायपूर्ण आर्थिक व्यवस्थाओं के साथ जोड़कर ही प्रभावी बनाया जा सकता है। यही आलोचनात्मक दृष्टिकोण उनके चिंतन को और अधिक प्रासंगिक बनाता है, क्योंकि वे स्वयं भी कर्म, विवेक और व्यावहारिकता के कट्टर समर्थक थे।

अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द का शिकागो में दिया गया प्रथम भाषण मात्र भारतीय आध्यात्मिक परम्परा का प्रतिनिधित्व ही नहीं करता, बल्कि वह वैश्विक नैतिकता, धार्मिक सह-अस्तित्व, सांस्कृतिक बहुलतावाद और विश्व शांति का एक ऐसा मार्ग प्रस्तुत करता है जिसकी प्रासंगिकता समय के साथ और अधिक मजबूत हुई है। वर्तमान विश्व यदि स्थायी शांति, पारस्परिक सम्मान और सहयोग पर आधारित व्यवस्था का निर्माण करना चाहता है, तो विवेकानन्द के इस भाषण में निहित मानवीय दृष्टि आज भी एक सशक्त वैचारिक आधार प्रदान करती है।

स्वामी विवेकानन्द का विश्व धर्म सम्मेलन में दिया गया प्रथम भाषण आधुनिक विश्व इतिहास के उन प्रभावशाली भाषणों में से एक है जिन्होंने अपने समय की सीमाओं को पार करते हुए सार्वकालिक महत्त्व का मार्ग दिखाया है। यह भाषण केवल धार्मिक विचारों का प्रस्तुतीकरण प्रतीत नहीं होता, बल्कि एक वैकल्पिक वैश्विक दृष्टिकोण का प्रतिपादन भी करता दिखाई देता है, जिसमें मानवता, सहिष्णुता, संवाद और आध्यात्मिक एकता को विश्व व्यवस्था का आधार माना गया है। स्वामी विवेकानन्द ने बिना किसी आक्रामकता या वैमनस्य के भारतीय संस्कृति और वेदान्त की सार्वभौमिकता को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वह न केवल यूरोप, बल्कि समस्त विश्व समुदाय के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सके।

स्वामी विवेकानन्द की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने धर्म को संघर्ष का माध्यम नहीं, बल्कि संवाद का माध्यम बनाया। उनके अनुसार किसी धर्म की श्रेष्ठता दूसरे धर्म की आलोचना में नहीं, बल्कि उसके अनुयायियों के नैतिक जीवन और मानवीय व्यवहार में दिखाई देनी चाहिए। यह विचार उस समय अत्यंत क्रांतिकारी था, क्योंकि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में धार्मिक प्रचार प्रायः प्रतिस्पर्धा और मतांतरण की भावना से प्रेरित होता था। विवेकानन्द ने इस प्रवृत्ति का प्रत्यक्ष विरोध न करते हुए भी यह स्पष्ट कर दिया कि किसी भी धर्म की वास्तविक शक्ति उसकी समावेशी

दृष्टि और मानव कल्याण की भावना में निहित होती है। इसी कारण उनका भाषण धार्मिक बहुलतावाद के आधुनिक सिद्धान्तों का प्रारम्भिक दार्शनिक आधार माना जा सकता है जो कि विश्व को शांति एवं सहअस्तित्व का मार्ग दिखा सकता है।

समकालीन वैश्विक परिदृश्य में विवेकानन्द का यह भाषण एक नैतिक दस्तावेज़ के रूप में देखा जा सकता है। यह भाषण हमें याद दिलाता है कि वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, आर्थिक समृद्धि और तकनीकी प्रगति तभी स्थायी और सार्थक होंगी जब उनका आधार मानवीय संवेदनशीलता, सहिष्णुता और नैतिक उत्तरदायित्व होगा। वर्तमान समय में जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव-प्रौद्योगिकी और डिजिटल संचार विश्व को अभूतपूर्व गति से बदल रहे हैं, तब मनुष्य के नैतिक विकास का प्रश्न पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। विवेकानन्द का भाषण इस नैतिक रिक्तता को भरने की क्षमता रखता है, क्योंकि उसका मूल संदेश मनुष्य के भीतर निहित दिव्यता की पहचान और उसके सम्मान पर आधारित है।

स्वामी विवेकानन्द का 11 सितम्बर 1893 को शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में दिया गया प्रथम भाषण भारतीय इतिहास की एक गौरवपूर्ण घटना होने के साथ-साथ विश्व बौद्धिक इतिहास का भी एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह भाषण किसी धार्मिक मत की विजय का घोष नहीं था, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए सह-अस्तित्व, संवाद और सार्वभौमिक बन्धुत्व का संदेश था। विवेकानन्द ने भारतीय वेदान्त, उपनिषदों और सनातन सांस्कृतिक परम्परा के मूल सिद्धान्तों को आधुनिक विश्व की भाषा में प्रस्तुत करते हुए यह सिद्ध किया कि धार्मिक विविधता मानव सभ्यता की शक्ति है, दुर्बलता नहीं।

प्रस्तुत शोध-पत्र से यह स्पष्ट होता है कि विवेकानन्द के प्रथम भाषण की वैश्विक प्रासंगिकता आज पहले की अपेक्षा अधिक है। धार्मिक कट्टरता, सांस्कृतिक संघर्ष, नस्लीय भेदभाव, शरणार्थी संकट, अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद और वैश्विक अविश्वास जैसी चुनौतियों से जूझती हुई दुनिया को जिस नैतिक दृष्टि की आवश्यकता है, उसका सशक्त स्वरूप विवेकानन्द के भाषण में विद्यमान है। उनका संदेश हमें यह सिखाता है कि विश्व शांति केवल राजनीतिक समझौतों से नहीं, बल्कि पारस्परिक सम्मान, संवाद, करुणा और मानवीय एकता की भावना से स्थापित हो सकती है।

अतः अंत में यही कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द का शिकागो में दिया गया प्रथम भाषण समय और स्थान की सीमाओं से परे एक सार्वभौमिक मानवीय घोषणा है। यह भाषण केवल इतिहास का विषय नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की वैश्विक सभ्यता के निर्माण का एक वैचारिक आधार प्रस्तुत करने का प्रयास भी करता है। जब तक विश्व में विविध धर्म, संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ विद्यमान रहेंगी, तब तक विवेकानन्द का यह भाषण मानवता को सहिष्णुता, समन्वय और शांति की दिशा में प्रेरित करने और मार्गदर्शन का कार्य करता रहेगा।

सहायक संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विवेकानन्द साहित्य, अनुदानित संस्करण, दस खण्ड में, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता.
2. रोमां रोलां, विवेकानन्द की जीवनी, अनु. धनराज विद्यालंकार, संपा. डॉ० रघुराज गुप्त, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता, 2001.

3. स्वामी निखिलानन्द- विवेकानन्द: एक जीवनी, अनु. स्वामी विदेहात्मानन्द, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता, 2001.
4. स्वामी विवेकानन्द- परिव्राजक (मेरी भ्रमण कहानी), रामकृष्ण मठ, नागपुर, 1996.
5. स्वामी विवेकानन्द- भारतीय व्याख्यान, रामकृष्ण मठ, धन्तोली, नागपुर, 1993.
6. स्वामी विवेकानन्द- व्यावहारिक जीवन में वेदांत, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 1989.
7. श्री सत्येन्द्रनाथ मजूमदार, विवेकानन्द-चरित, अनु०- पं० मोहिनी मोहन गोस्वामी, रामकृष्ण मठ, धन्तोली, नागपुर, 1996.
8. Asim Chaudhuri, Swami Vivekananda in Chicago: New Findings, Advaita Ashram, Calcutta, 2000.
9. Beni Prasad Sharma, Swami Vivekananda: A Forgotten Chapter of His Life, Oxford Book and Stationery Co., Calcutta, 1963.
10. His Eastern and Western Disciples- The Life of Swami Vivekananda, , Advaita Ashram, Calcutta, 1963.
11. His Eastern and Western Admirers - Reminiscences of Swami Vivekananda, , Advaita Ashram, Calcutta, 1999.
12. John Henry Barrows, Ed. The Parliament of Religions, 02 Vols., Chicago, 1893.
13. Burke, Marie Louise. Swami Vivekananda in the West: New Discoveries. Advaita Ashrama.
14. United Nations. Universal Declaration of Human Rights (1948).

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध
ISSN 2321 – 9726
WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY
ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)
WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE
ISSN 2319 – 9202
WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES
ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)
WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY
ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION
ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM